

प्रश्न 1: अल-बरूनी के जीवन और 'किताब-उल-हिंद' 5 MARKS VVI के ऐतिहासिक महत्व का वर्णन करें।

अल-बरूनी का जन्म 973 ई. में उज्बेकिस्तान के ख्वारिज़्म में हुआ था। वह महमूद गज़नी के साथ 11वीं शताब्दी में भारत आया था। उसने संस्कृत सीखी और भारतीय दर्शन, खगोल विज्ञान तथा सामाजिक रीति-रिवाजों का गहन अध्ययन किया। उसकी प्रसिद्ध कृति 'किताब-उल-हिंद' अरबी भाषा में लिखी गई है। यह ग्रंथ प्रश्न-उत्तर शैली में है और इसमें भारतीय समाज, धर्म, तथा विज्ञान का तटस्थ और वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। यह मध्यकालीन भारतीय इतिहास को जानने का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रामाणिक पुरातात्विक व साहित्यिक स्रोत है।

प्रश्न 2: इब्न बटूता के यात्रा वृत्तांत 'रहला' के आधार पर 5 MARKS VVI चौदहवीं शताब्दी के भारतीय समाज व शहरों का वर्णन करें।

इब्न बटूता मोरक्को का एक प्रसिद्ध यात्री था जिसने 'किताब-उल-रहला' की रचना की। उसके अनुसार चौदहवीं शताब्दी में भारतीय शहर घनी आबादी वाले, समृद्ध और विपुल अवसरों से भरपूर थे। बाजारों में कपड़ों, मसालों और बहुमूल्य वस्तुओं का बड़ा व्यापार होता था तथा सांस्कृतिक गतिविधियाँ चलती थीं। उसने भारत की डाक प्रणाली (उलूक और दावा) की अत्यधिक प्रशंसा की है, जिससे संदेश तीव्र गति से राजा तक पहुँचते थे। इब्न बटूता के ये विवरण हमें सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक के काल के भारतीय जनजीवन और प्रशासनिक व्यवस्था की स्पष्ट तस्वीर प्रदान करते हैं।

प्रश्न 3: फ्रांसिस बर्नियर कौन था? मुगल कालीन भारत 5 MARKS VVI में 'भूमि के स्वामित्व' के संबंध में उसके विचारों की विवेचना करें।

फ्रांसिस बर्नियर सत्रहवीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य में आया एक फ्रांसीसी चिकित्सक और दार्शनिक था। उसने मुगल कालीन व्यवस्था की तुलना यूरोप से की। बर्नियर का सबसे प्रमुख विचार 'निजी भू-स्वामित्व का अभाव' था। उसका दावा था कि मुगल साम्राज्य में सारी भूमि का एकमात्र मालिक सम्राट होता था, और किसानों या अमीरों के पास पैतृक ज़मीन नहीं होती थी। बर्नियर के अनुसार, इस राजकीय स्वामित्व ने किसानों और भू-स्वामियों को भूमि सुधार या दीर्घकालिक निवेश करने से हतोत्साहित किया, जिससे कृषि का पतन हुआ और अर्थव्यवस्था कमजोर हुई।

प्रश्न 4: मध्यकालीन भारत के इतिहास लेखन में विदेशी 5 MARKS VVI यात्रियों के यात्रा वृत्तांतों के महत्व और सीमाओं का परीक्षण करें।

विदेशी यात्रियों के यात्रा वृत्तांत इतिहास लेखन के अत्यंत मूल्यवान स्रोत हैं। ये हमें राजाओं के राजनीतिक इतिहास के अलावा आम जनता के खान-पान, वेशभूषा, धार्मिक विश्वासों, बाजारों और सामाजिक रीति-रिवाजों की जीवंत जानकारी देते हैं जो राजसी दरबार के इतिहास में छूट जाती हैं। परंतु इनकी कुछ सीमाएँ भी थीं। ये यात्री अक्सर भारतीय संस्कृति से अनभिज्ञ थे, भाषा की बाधा के कारण दूसरों की सुनी-सुनाई बातों पर निर्भर रहते थे, और अपनी यूरोपीय या इस्लामी पृष्ठभूमि के चश्मे से भारतीय समाज को देखते थे, जिससे कभी-कभी उनके विवरणों में पूर्वाग्रह या अतिशयोक्ति आ जाती थी।